International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 02(I), April - June, 2023, pp. 130-132

राव अमर सिंह राठौड़ (नागौर, राजस्थान) के समकालीन नागौर के परिदृश्य का अध्ययन

संगीता*
डॉ. सुनीता सिन्हा**

प्रस्तावना

मध्यकालीन इतिहास मे नागौर राजनीति तथा प्रशासन कर प्रमुख केन्द्र था। मध्यकाल मे नागौर की शासन व्यवस्था का संचालन मुस्लिम शासकों द्वारा किया जाता था। भारत मे दिल्ली के सुल्तानों के बाद मुगल सत्ता की स्थापना हुई। शेरशाह सूरी के सूर साम्राज्य के अन्तर्गत नागौर सरकार का गठन किया। मुगल बादशाह अकबर ने नागौर को अजमेर सूबे के अधीन किया था।

शोध प्रभा एवं शोध के उद्धेश्य

सन् 1638 ई. मे मुगल बादशाह शाहजहां ने मारवाड़ के शासक गजसिंह प्रथम के ज्येष्ठ पुत्र अमरसिंह राठौड़ को नागौर परगना जागीर दी तथा साथ ही 3000 जात व 3000 सवारों को मनसब दिया। समय समय पर शासकों ने ऐतिहासिक नगरी नागौर मे अनेक कार्य किये। जैसे जल प्रबंधन के स्त्रोतो का निर्माण किया। इन जल स्त्रोतो का अनुठा जल प्रबंधन देखने को मिलता है।

ऐतिहासिक शहर नागौर मे सात दरवाजे है। प्रत्येक दरवाजे के बाहर एक–एक गणेश मंदिर है। इन दरवाजो के बाहर एक एक तालाब स्थित है। जैसे दिल्ली दरवाजा के बाहर शक्कर तालाब है, अजमेरी दरवाजा जिसे हाथी पोल भी कहा जाता है के बाहर समस तालाब है, त्रिपोलिया दरवाजा के बाहर गिनानी तालाब स्थित है। माही दरवाजा के बाहर बख्ता सागर, नया दरवाजा के बाहर प्रताप सागर, नकास दरवाजा के बाहर झड़ा तालाब और कुम्हारी दरवाजा जिसे जोधपुरी दरवाजा भी करते है के बाहर लाल सागर नागौर स्थापत्य कला के विकास मे खानजादा वंशजो का योगदान है। इनमे प्रमुख रूप से शम्स खां ददानी जिसके शासन काल मे अनेक इमारतों का निर्माण करवाया जिनमे शम्सी मस्जिद, ईदगाह, त्रिपोलिया तालाब, समस तालाब इत्यादी।

* शोधार्थी, इतिहास विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान।
** पर्यवेक्षक, इतिहास विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान।

शोध विषयवस्तु

इस शोध को करने का हमारा उद्देश्य यह है कि नागौर जिले का राजस्थान के योगदान में क्या योगदान रहा है ?, इस पर विचार किया गया है।

ऐतिहासिक आधुनिक युग में राठौड वंश का नागौर के इतिहास में योगदान है, जो सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक आस्था जूड़ा हुआ है। इन ऐतिहासिक स्त्रोतों की उपयोगिता के बारे में बताकर वर्तमान दौर में ऐतिहासिक स्त्रोतों के बारे में जन समूह को जागरूक करना आवश्यक है। हमारा उद्धेश्य यह है कि लोगो को ऐतिहासिक धरोहरो के प्रति आस्था, धार्मिकता और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से संदेश देना चाहिए। हमारा मुख्य उद्देश्य यह है कि लोगों को ऐतिहासिक स्त्रोतों को धार्मिक तथा सांस्कृतिक आस्था से जोड़कर संदेश देना है। साथ ही इन ऐतिहासिक स्त्रोतों का सही रख–रखाव रखकर पर्यटन व धार्मिक पर्यटन का स्थल बनाने के लिए सरकार का ध्यान आकर्षित करना। वर्तमान दौर में इन ऐतिहासिक स्त्रोतों का उचित रख–रखाव व संरक्षित रखने के लिए लोगों को जागरूक करना, क्योंकि ये स्थल धार्मिक आस्था व सांस्कृतिक आस्था केन्द्र है जैसे – नव प्रसूता द्वारा कुआँ पूजन का रीति रिवाज, गणगौर उत्सव के दौरान गौर को पानी पिलाने का रीति रिवाज, मकर संक्राति बहुओं द्वारा अपनी सास को सरोवर भैस (वस्त्र) पहनाने की प्रथा आदि। हमारा मुख्य उद्देश्य यह है कि लोगों को ऐतिहासिक स्त्रोतों को धार्मिक तथा सांस्कृतिक आस्था से जोड़कर संदेश देना है।

राव अमरसिंह का ताम्रपत्र – भाषा देशज

स्थान – पिरोजपुर

तिथि – माघ सुदि 8, वि.सं. 1695 (1639)

विवरण – इस ताम्रपत्र मे महाराजाधिराज महाराज श्री अमरसिंह द्वारा चांदा रतनसी देदावत व नाथा रतनसीयोत को पैरोजपुर गांव देने का उल्लेख है तथा कुंवर राईसिंह (रायसिंह) का भी नाम इस ताम्रपत्र मे आया है।

अमरसिंह बावड़ी

किनारे पर स्थित है। बावड़ी का मुख्य द्वार–पोलनुमा आकृति मे पश्चिमी दिशा मे स्थित है। इसके बाद बावड़ी को मोड़ दक्षिण दिशा मे एक पोल आती है, इसके बाद एक छोटा दरवाजा आता है, जहां पानी आता है, इसके बाद एक ओर पोल आती है और इसके बाद एक ओर पोल आती है। इस पोल के बाद बावड़ी का कुआं आता है, यह कुआ लगभग 100 से 150 तक गहरा है, इसमे अभी गंदा पानी का भराव है। बावड़ी लाल पत्थर से निर्मित है, बावड़ी मे 40 सीढियां है। बावड़ी की चौड़ाई 10–12 फीट है, बावड़ी की गहराई लगभग 25–30

फीट है। बावड़ी की लम्बाई लगभग 70 से 75 फीट है। बावड़ी के पूर्वी तथा पश्चिमी दिशा मे छोटे छोटे छिद्र है, जिनसे बरसात का पानी आता था। बावड़ी की पश्चिमी दिशा मे एक छोटा दरवाजा है जो तीन दरवाजों मे खुलता है, इस दरवाजे मे 10 से 15 सीढियां है। बावडी के कुएं के ऊपर एक पत्थर की विशाल चट्टान लगी है, जिसमे एक बड़ा छिद्र तथा चार छोटे–छोटे छिद्र है, जहां से पानी खींचने का यंत्र लगाते थे। कुएं के ऊपर दक्षिण दिशा मे पत्थर के तल पर एक छोटी त्रिभुजाकार नाली है। यह नाली एक छोटे से कुण्ड मे खुलती है। इस कुण्ड मे से पानी एक बड़े होद/टैंक मे आता था। बावड़ी के ऊपर चबुतरा बना हुआ है, जिस के ऊपर दाना डाला जाता था। स्थानीय जनश्रुति के अनुसार इस बावड़ी का निर्माण नागौर के राव अमरसिंह राठौड़ ने करवाया था।

निष्कर्ष

प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नही, इतिहास गवाह है की भौतिकता सिर्फ मृग तृष्णा से समान है। बड़े बड़े महलो के शासक राजा, महाराजा, के द्वारा निर्मित नगर, दुर्ग महल इमारते आज अवशेष के रूप मे मिलते है या लुप्त प्रायः हो गये है। अतः भौतिकता के इस आधुनिक युग मे अत्याचार के गहरे गर्त मे भटकते लोगो को आदर्श चरित्र के मूल्य की प्रासंगिकता को समझना चाहिये। आपसी मतभेद को त्याग, प्रेम पूर्ण सौहार्द्व जीवन जीना चाहिए।

भजीवन का ध्येय बदलते ही,
बदल जाता है जीवन
प्यार और करूणा से सोचें
ते जीने का अर्थ बदल जाता है।

संदर्भ गंथ सूची

1. मुंदियाड़ री ख्यात – यह ग्रंथ बारहठ चेनदान द्वारा लिखित है। इसका संपादन विक्रमसिंह भाटी ने किया था। इसका प्रथम संस्करण 2005 मे प्रकाशित हुआ था। इस ग्रंथ का प्रकाशन ठाकुर अर्जुनसिंह सोनगरा जालौर द्वारा किया जाता है।
2. मारवाड़ रा परगना री विगत भाग – 2 यह ग्रंथ मुणनौत नेणसी द्वारा लिखित है। इसका संपादन फतेह सिंह (एम.ए.डी.लिट.) ने किया था। इसका प्रथम बार प्रकाशन 1969 ई. मे हिन्दी भाषा मे किया था। इसका प्रकाशन राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर किया जाता है।
3. जोधपुर राज्य की ख्यात – इसका संपादन रघुवीर सिंह तथा मनोहरसिंह राणावत ने किया था। इसका प्रकाशन भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली द्वारा किया जाता है।
4. बांकीदास री ख्यात – इस ग्रंथ का लेखन बांकीदास ने किया था। इसका संपादन राजस्थान पुरातत्वाचार्य जिन विजय ने किया था। इस ग्रथ का प्रकाशन राजस्थान पुरातत्वाशेणा मंदिर जयपुर किया जाता था।
5. जल जीवन और समाज – इस पुस्तक का संपादन डॉक्टर ..... ने किया था। इसका प्रथम संस्करण 2019 मे प्रकाशित हुआ था। इसका प्रकाशन एनी बुक्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा किया जाता है।
6. आज भी खरे है तालाब – इसका लेखन अनुपम मिश्र ने किया है। इसका प्रथम संस्करण 1994 मे प्रकाशित हुआ था। इसका प्रकाशन राजस्थानी ग्रंथागार सोजती गेट जोधपुर द्वारा किया जाता है।
7. राजस्थान की रजत बुदे – इस पुस्तक का लेखन अनुपम मि़ ने किया है। इसका प्रकाशन राजस्थानी ग्रंथागार सोजती गेट जोधपुर द्वारा किया जाता है।

❖◆❖